कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

(Established by the State Legislature Act XII of 1956)

('A+' Grade, NAAC Accredited)

3.4.10

Documents for Publications of

Dr. Kuldeep Singh

on Distance Education at DDE during last five years.

रेश कुमार

र बीस साल तक 'भारतीय वायुसेना' में
सनातन आर्य भारतीय सभ्यता एवं
। आपने वायुसेना से सेवा-निवृत्ति के
वभाग में उप-निरीक्षक के पद पर कार्य
तकोत्तर, एम. फिल्, पीएच.डी. की
आपने हिन्दी विषय में यूजीसी नेट व
वर्तमान में आप राजकीय महाविद्यालय
असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।
ाष्ट्रीय शोध-जर्नल्स में अब तक 25
लेखक की प्रकाशित पुस्तकें प्यार का
और दिशा, हिन्दी साहित्य की विकास
ंपादित) व कोरोना काल अवसर या

9 788195 179787

चिन्तन

सम्पादक- डॉ. सुरेश कुमार

चिन्तन

सम्पादक
डॉ. सुरेश कुमार

ISBN : 978-81-951797-8-7

प्रकाशक :
शब्द श्री प्रकाशन
1087, वार्ड नं. 31 गली नं. 5,
मयूर विहार, गोहाना रोड, सोनीपत-131001
मोबाईल : 0-9416264469
E-mail : vpsing6719@gmail.com

© : लेखक

मूल्य :
750.00 रुपये

प्रथम संस्करण :
2021

आवरण :
एस. के. ग्राफिक्स, दिल्ली-110032

शब्द-संयोजन :
ज्योति एंटरप्राईजेज , दिल्ली-110032

मुद्रक :
पूजा ऑफसेट, दिल्ली-110093

शुभाशीष

अथर्ववेद में एक मंत्र आता है -

अयुतोऽहमयुतो मे आत्माऽयुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रम्
अयुतो मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे
व्यानोऽयुतोऽहम् सर्वः ।। अथर्ववेद, 19/51/1

अर्थात् मैं अकेला दस हजार मनुष्यों के समान हूँ, मेरा
के समान है, मेरी आंख दस हजार मनुष्यों के समान है, मेरा
के समान है, मेरा प्राण दस हजार मनुष्यों के समान है, मेरा
के समान है। मेरा व्यान दस हजार मनुष्यों के समान है। मैं
मनुष्यों के समान हूँ, फिर मैं कौनसा काम नहीं कर सक

यदि किसी व्यक्ति में इतनी प्रबल एवं दृढ़ इच्छाशक्ति
सतत् संघर्ष, दैहिक एवं मानसिक परिश्रम तथा दूरदर्शी सो
में रहते हुए क्या कुछ नहीं कर सकता? वह व्यक्ति कुछ भी
है । कोई भी प्रयास अपने आपमें छोटा या बड़ा, हीन या
अपितु सृजानात्मक एवं पावन मानसिकता से सज्जित होकर
है वह इन विपरीत कोटियों से ऊपर सार्थक, विकासपरक ए
ऐसा ही रचनात्मक प्रयास 'चिन्तन' पुस्तक को प्रस्तुत क
किया है । मेरी तरफ से इनको कोटि-कोटि शुभकामनाएं

सां

- धूमिल की कविताओं में मानवीय संवेदना / मन्नू राम मीना 147
- मेवाड़ महाराणा और अकबर / राजकुमार वाणावत 158
- Environmental Degradation: Water Pollution, A Major Issue and Challenge for Developing India / Dr. Rajkumar Rathi.... 167
- पर्यावरण प्रदूषण पर चिंता, चिंतन और चेतावनी / रेनू कुमारी 179
- अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृत नवगीतों में बिम्ब-प्रतीक विधान डॉ. समय सिंह मीना 189
- लैंगिक असमानता के विविध आयाम-एक समाजशास्त्रीय विवेचना सन्तेश्वर कुमार मिश्रा 197
- रहीम की सांस्कृतिक चेतना / राजकुमार मीणा, सीमा कुमारी मीणा 207
- विश्व में जल-प्रदूषण के स्त्रोत / डॉ. शीशराम यादव 220
- वायु प्रदूषण का विश्व के वायुमण्डल एवं जलवायु पर प्रभाव डॉ. शीशराम यादव 227
- विश्व में वायु प्रदूषण नियन्त्रण के उपाय / डॉ. शीशराम यादव 231
- विश्व में मृदा संरक्षण की विधियाँ / डॉ. शीशराम यादव 234
- ब्रज साहित्य, संस्कृति एवं वैश्विक मानवतावाद / डॉ. शीतल मीना 238
- रामायण में युद्ध व्यवस्था / सुचेता 248
- भारतीय लोकतंत्र में जय प्रकाश नारायण के दल विहीन लोकतंत्र सम्बन्धी विचार / डॉ. कुलदीप 255
- संस्कृत पत्रकारिता के विविध आयाम / डॉ. आशा सिंह रावत 264
- महाकवि भवभूति की कृतियों में राष्ट्रीय चेतना / डॉ. बाबूलाल मीना 271
- उपमान प्रमाण (न्याय, मीमांसा और वेदान्त के विशेष संदर्भ में) डॉ. रचना रस्तोगी 284
- Stories of Narendranath Mitra: The Role of Working Women after the Second World War (1945 – 1955) Dr. Sanchita Bose.. 294

Kuldeep

नये प्रभात की प्रतीक्षा

26 नवंबर के किसान आंदोलन एवं कर्मचारी हड़ताल को वि
से कोरोना की अफवाह प्रचारित कर दी है। अभी बिहार,
चुनाव था तब कोरोना नहीं था। नकली लोग नकली समस्या
का शोषण करते रहेंगे धरातल पर विकास का कोई काम क
नहीं।

पाखंड व शोषण जितना धर्म की आड़ में होता अ
अधिक पाखंड व शोषण आजकल विज्ञान, चिकित्सा व
हो रहा है।

इस देश में सिर्फ आम आदमी की ही किस्मत ख
सब जमकर इस देश को लूट रहे हैं।

कोई राजनीति की आड़ में, कोई धर्म की आड़ मे
की आड़ में, कोई चिकित्सा की आड़ में, कोई शिक्षा की
की आड़ में तो कोई आरक्षण की आड़ में आम आदमी
बैलेंस बढ़ाने पर लगे हुए हैं।

दिल्ली में 26 नवंबर से शुरू होने वाले किसान आं
के लिए किसान नेताओं को रात के अंधेरे में उनके घरों से
जा रहा है। इन भारत विरोधियों के सारे उल्टे काम रा
आए हैं।

छोटूराम से संबंधित यादगार दिवस पर सरकार द्वा

ासापहरेण भगिनी में विरुपिता। सत्य भार्या जनस्थानत्सीतां

27।

33।

शक्रस्य संग्रामं देवसघैरनिर्जितः तस्मिन् महति संग्रामे राजा

भारतीय लोकतंत्र में जय प्रकाश नारायण के दल विहीन लोकतंत्र सम्बन्धी विचार

डॉ. कुलदीप
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

भारत जब 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ तो ज्यादातर भारतवासी खुश थे कि वर्षों गुलामी के बाद आज भारत देश का नेतृत्व भारतीय नागरीक नेता पंडित जवाहरलाल के हाथों में आ गया। उस समय पश्चिम का बुद्धिजीवियों का यह भी तर्क था कि क्या भारतीय नेता देश को चला पाएगा। क्या भारत का प्रथम प्रधान मंत्री देश को एक सुत्र में बाँधकर विश्व में भारत का क्या पहचान दिलायेगा। देश के आजादी कें बाद भी भा रत राष्ट्रीय स्तर पर कई तरह का राजनीति ताना बाना से गुजरता रहा। काँग्रेस पार्टी को चुनौती मिलना भी शुरू होने लगा। भारतवासियों को जय प्रकाश नारायण का आवाज सुनाई पड़ने लगा। जय प्रकाश जी का विचार और काँग्रेस का विचार भारत में महाआंदोलन का रूप लेता चला गया।

जे.पी. राजनीतिज्ञ से ज्यादा सत्य के अन्वेषक थे। सत्य को जानने की चेष्टा में वे मार्क्सवाद से समाजवाद, गाँधी, सर्वोदय, सम्पूर्ण क्रान्ति आदि कई विचारधाराओं के प्रभाव में आये तथा कई आन्दोलनों का नेतृत्व किया। लेकिन जैसे ही उन्हें लगा कि वह आन्दोलन, सत्य और न्याय की मांगों पर खरा नहीं उत्तर रहा है, उन्होंने अपने को उससे अलग करने का साहस दिखाया। यही कारण है, कि लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका के बारे में भी उनके विचार लम्बे राजनीतिक सफर में बदलते रहे हैं। यह सही है कि उनका राजनीतिक सफर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के महासचिव से शुरू हुआ और 1977 में केन्द्र में सत्ता परिवर्त्तन जनतापार्टी के नेतृत्व से हुआ जो जे.पी. आन्दोलन और प्रयास से सम्भव हुआ था। हालाँकि जीवन के

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल
(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)
(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 8 अंक : 30(III)
विक्रमी सम्वत् : 2076
अप्रैल-जून 2018

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत
ISO 9001 : 2008

शोध-आलेखानुक्रम

सम्पादकीय

- **Social justice and farmer Suicides in India**
  Zaibby Mann — 12-19
- **Role of Information & Communication Technology in English Literature**
  Dr. Parveen Kumar — 20-23
- **Arvinda Adiga's The White Tiger as a Master-Slave Dialectic**
  Dr. Vineeta — 24-27
- ਸਖਵੰਤ ਕੌਰ ਮਾਨ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਸਮਾਜ-ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਅਧਿਐਨ
  ਡਾ. ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ ਸਿੱਧੂ — 28-34
- ਪ੍ਰਵਾਸੀ ਰਹਿਤਲ ਦੀ ਬਿਰਤਾਂਤਕਾਰੀ ਜਰਨੈਲ ਸਿੰਘ ਰਚਿਤ ਕਹਾਣੀ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਟਾਵਰਜ਼
  ਡਾ. ਰੁਪਿੰਦਰ ਕੌਰ — 35-39
- जनजातिय आन्दोलन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका
  Sushila — 40-43
- मानव इच्छा अथवा विचारों में प्रतीकात्मकता
  डॉ सुषमा सिंह, अमित सिंह — 44-47
- हरियाणा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृण्मर्तियाँ : एक अध्ययन
  Anu Bala, Dr. Rajpal — 48-59
- जैनपरम्परायां रत्नत्रयस्य वर्तमाने प्रासंगिकता
  रविदत्तशर्मा — 60-63
- महिलाएँ, आर्य समाज व समाज सुधार
  सुषमा रानी — 64-70
- इतिहास के स्त्रोत के रूप में मौर्य अभिलेख
  गौरव गोयल — 71-76
- **The Kin and Sibling Relationship in The House of Seven Gables**
  Dr. Sakshi Sharma — 77-81
- हिन्दी का बदलता स्वरूप
  रिम्पी रानी — 82-86
- **Issues Within The Judiciary**
  S.P. Saini — 87-91
- संगीत शिक्षा एवं मानवीय मूल्य
  सचिन कौशिक — 92-101
- सामाजिक विकास में युवा छात्राओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव
  डॉ० अपर्णा कुमारी — 102-106
- बिहार में स्वतंत्रता आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में स्थानीय स्वशासन की भूमिका
  डॉ० संतोष कुमार चौधरी — 107-113
- सहकारिता आन्दोलन एवं मेहता समिति और मिर्धा समिति का ऐतिहासिक अध्ययन
  डॉ० मुकेश कुमार ठाकुर — 114-118
- वैदिक संस्कृति में धर्म
  डॉ० कुलदीप सिंह — 119-128

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 2.645

ISSN : 2249-2976

Pramāna
Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List No. 41241

Year : 6
Issue : 24(II)
April-June 2017
www.chintanresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

Pramāna
International Refereed
(Peer Reviewed)

Impact Factor : 2.645

Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-6, Issue-24(II) (April-June 2017) (Page No. 91-95)

भारतीय परंपरा की शिक्षा का इतिहास

डॉ॰ कुलदीप सिंह
सुपुत्र श्री रामसिंह पुनिया
म॰ सं॰ 878 व गांव भंटू कलां
फतेहाबाद (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

माता-पिता चाहे जैसी भी गलत या ठीक आज्ञा देते हो, संतान का कर्त्तव्य है कि वह बिना सोचे-विचारे उसका अनुसरण करें- अपनी चमड़ी से भी यदि संतान जूते बनवाकर माता-पिता को पहना दे तो भी माता-पिता का कर्ज नहीं उतरता-माता-पिता कितना ही बड़ा क्रूर एवं अनैतिक कार्य करें वह क्षम्य है लेकिन संतान मामूली भी अनैतिक कार्य करेगी तो उसे नरकों में यातनाएं भोगनी पड़ेगी- संतान कितना ही प्रयास करे लेकिन माता-पिता का कर्ज नहीं उतर सकता आदि-आदि कितनी ही बेतुकी, तर्कहीन, बेसिर पैर की तथा आधारहीन बातें भारत में ही नहीं पूरे विश्व में कही-सुनी जाती हैं। अब जो इन बातों को कहते हैं लेकिन वे स्वयं इनका अनुसरण नहीं करते। कहने वाले भी तो किसी न किसी की संतान होते हैं। ये ऊपरोक्त उपदेश स्वयं हेतु नहीं हैं अपितु दूसरों हेतु हैं। यदि कोई उन उपदेशकों से प्रश्न करें कि क्या आपने इन उपदेशों को अपने आचरण में उतारा है तो वे तुरंत प्रश्नकर्ता को उदंडता, मूर्खता, वाचालता एवं आचारहीन की उपाधि दे देंगे।

मुख्य-शब्द : शिक्षक, शिक्षा संस्थान, संस्कृति ।

ऋग्वेद् में आता है - त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बमुविथ। अधाते सुम्नमीमहे॥

हे सब को वास देने वाले तथा सर्वत्र निवास करने वाले असंख्य सत्कृत्यों के संपादक परमात्मा! तु ही हम सबका पिता है व तू ही माता है। अतएव हम तेरा उत्तम मनन करते हैं।

अर्थवेवद्, 3-30-2 में आता है - अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः । इसका अर्थ है कि पुत्र पिता के अनुकूल व्रत वाला हो और माता के समान विचार वाला हो।

यजुर्वेद् में आता है - मा नो वधी पितरं मोत मातरम् । इसका अर्थ है कि कभी भी माता व पिता की हत्या न करें ।

तैत्तिरीय उपनिषद् में आता है - त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। इसमें माता-पिता को ब्रह्म कहा गया है ।

एक और जगह तैत्तिरीय उपनिषद् में आता है - मातृदेवो भव! पितृदेवो भव!

इसका अर्थ है कि माता व पिता देवता के तुल्य पूजनीय हैं।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है - मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषों वेद । इसका अर्थ है कि जब तीन उत्तम शिक्षक हों अर्थात् माता, पिता व आचार्य, तभी मनुष्य ज्ञानवान हो सकता है ।

website : www.chintanresearchjournal.com

ISSN : 2348 – 876X
Impact Factor 2.571

International Refereed

आर्य

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)

(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)

(Indexed & Listed at : Research Bib., Japan)

(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

वर्ष : 3 अंक : 12(II)

विक्रमी सम्वत् : 2073

सृष्टि सम्वत् : 1960853117

दिसम्बर 2016–फरवरी 2017

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO : 9001-2008

- कौटिल्य और स्त्री विमर्श
  - Dr Sushma 107–110
- कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री–अस्मिता के नये सन्दर्भ
  - डॉ. शशी पालीवाल 111–115
- भारतीय इतिहास में सूफी संत : एक समीक्षा
  - डॉ॰ कुलदीप सिंह 116–123
- भारतीय इतिहास का विकृतिकरण : सूफी मत के विशेष संदर्भ में
  - डॉ॰ कुलदीप सिंह 124–128

website : www.chintanresearchjournal.com

ISSN : 2348 – 876X
Impact Factor 2.571

International Refereed

आर्य

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib., Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

वर्ष : 3 अंक : 12(II)
विक्रमी सम्वत् : 2073
सृष्टि सम्वत् : 1960853117
दिसम्बर 2016–फरवरी 2017

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO : 9001-2008

- कौटिल्य और स्त्री विमर्श
  - Dr Sushma 107–110
- कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री-अस्मिता के नये सन्दर्भ
  - डॉ. शशी पालीवाल 111–115
- भारतीय इतिहास में सूफी संत : एक समीक्षा
  - डॉ० कुलदीप सिंह 116–123
- भारतीय इतिहास का विकृतिकरण : सूफी मत के विशेष संदर्भ में
  - डॉ० कुलदीप सिंह 124–128

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journals List N. 41243)

वर्ष : 9 अंक : 34(iii)
विक्रमी सम्वत् : 2076
अप्रैल-जून 2019

संपादक
आचार्य (डॉ॰) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत
ISO 9001 : 2008

संस्कृत छात्रों के लिए अनुसंधान–नैतिकता
श्री नरेश कुमार शर्मा 134-136

कालिदास की कृतियों में प्रकृति चित्रण
मनीलता पचानौत 137-141

गीता में वर्णित शिक्षा पद्धति की वर्तमान में उपादेयता
डॉ. हेमलता 142-145

भारत में महिला सशक्तिकरण एवं विधिक प्रावधान
डॉ० अनिल कुमार शर्मा 146-151

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की मुहिम
डॉ.बबीता 152-158

राजस्थान में उच्च शिक्षा में सरकारी–निजी सहभागिता (Public Private Partnership) यथास्थिति के प्रति अभिधारकों का प्रत्यक्षण – एक अध्ययन
डॉ. दया दवे, ममता झालावत 159-165

राष्ट्रीय नव जागरण और हिन्दी पत्रकारिता
डॉ. अनिल अग्रवाल 166-171

'संस्कृतमधुगीतगुंजनम्' में पर्यावरण चिन्तन
विकास कुमार मीना 172-176

पं० गंगाराम शास्त्री जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
डॉ. कमलेश माथुर, शिखा दीक्षित 177-180

'संस्कृतमधुगीतगुंजनम्' में जीवन मूल्य
विकास कुमार मीना 181-183

बृहत्त्रयी में वर्णित राजधर्म की विवेचना
शालू रानी 184-187

राजशेखर के बालरामायणम् नाटक में अद्भुत रस विवेचन
डॉ० सन्ध्या कुमारी 188-193

हर्ष की नाटिकाओं में प्रकृति चित्रण
अनीता शर्मा 194-198

वाल्मीकीय रामायण में वर्णित वर्ण व्यवस्था
रमेश कुमार 199-201

अभिराज राजेन्द्र मिश्र की संस्कृत कथा साहित्य में सामाजिक–चेतना
प्रोफेसर अगम कुलश्रेष्ठ, मोनिका मीना 202-206

महाभारत में वर्णित पुरुषार्थ चतुष्ट्य
मेघा शर्मा 207-211

कालिदाससाहित्ये ज्यौतिषतत्वस्य विवेचनम्
मनीष कुमार त्रिपाठी 212-218

कान्तारकथा में पशु समाज
राहुल कुमार यादव 219-222

ਮਹਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕਾਂਗ ਦੀ ਕਹਾਣੀ 'ਭਾਰ' ਵਿਚੋਂ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਰਾਜਸੀ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ 223-225
ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ

भारतीय इतिहास के ऋषि, मुनि एवं सुधारक
डॉ० कुलदीप सिंह 226-231

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna
Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 8
Issue : 31(iii)
Jan-March 2019
www.pramanaresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

Changing Dimension of Adultery in Indian Context: A Critical Analysis
Dr. Gaurav Kaushik **97-102**

बच्चों के शारीरिक विकास में पूरक आहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. मणीषा कुमारी **103-108**

गठबंधन के राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका
डॉ० संजीव कुमार राय **109-112**

सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद सिद्धान्त का समीक्षात्मक अध्ययन
डॉ० संतोष कुमार झा **113-117**

बिहार के पंचायती राज में दलित महिलाओं का नेतृत्व
डॉ० अलका कुमारी **118-121**

भारत में सहकारी आन्दोलन का विकास
डॉ० मुकेश कुमार ठाकुर **122-127**

सामाजिक विकास के परिप्रेक्ष्य में युवाओं का व्यक्तित्व संरचना
डॉ० अपर्णा कुमारी **128-132**

गीता में योग द्वारा वैश्विक कल्याण का संदेश
डॉ० जितेन्द्र आचार्य **133-147**

पाश्चात्य ऐतिहासिक परंपरा में सौंदर्य विवेचन
डॉ० कुलदीप सिंह **148-155**

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)
(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 9 अंक : 33(III)
विक्रमी सम्वत् : 2076
जनवरी-मार्च 2019

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

भारतीय इतिहास में मानवीय-मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता
डॉ॰ कुलदीप सिंह 104–109
अलाउद्दीन खिलजी की राज्य व्यवस्था का सामाजिक आयम
डॉ॰ बबलू ठाकुर 110-113
भारतीय जनता पार्टी की लोकतंत्र मेंभूमिका : आलोचनात्मक पक्ष
उमंगिका 114-118

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 7
Issue : 28 (IV)
April-June 2018
www.chintanresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

आधुनिक सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द 110-113
-अनुपम भारती
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दरभंगा महाराजा लक्ष्मी स्वर सिंह का योगदान 114-116
-डॉ० रविन्द्र कुमार
भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार की उभरती प्रवृतियाँ एवं समस्याएँ 117-122
-डॉ० हरि किशोर केशव
दलित प्रश्न का औचित्य 123-125
-डॉ० मनोज कुमार साह
भारत में मध्यम वर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति 126-132
-शिव शंकर यादव
बिहार की राजनीति में जातीय समीकरण 133-136
-जितेन्द्र कुमार यादव
Executive Legislation in India: An Analysis 137-143
-Reena Kansal
जानराजचम्पूकाव्ये अर्थालङ्कारचारुत्वम् 144-147
-धर्मेन्द्रः
प्राचीन काल में भारत की शिक्षा प्रणाली 148-155
-अमित कुमार
Partap Singh Kairon : Role in Akali Dal (1929-1940) 156-159
-Amandeep Singh
Rights and Duties of Daughter under Hindu Law 160-166
-Dr. Preety Jain
Procedure In Relation to Children in Conflict with Law 167-175
-Pawan Kumar
Non alignment policy of Pt. J.L. Nehru 176-180
-Dr. Rekha Rani
Understanding family organization in India: Trends and Determinants 181-187
-Dr. Shaizy Ahmed
Robert Frost's Poetry: A Reflection of Modern Dilemma as well as Elucidation 188-193
-Mamta Kamboj
शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की नैतिक निर्णय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन 194-197
-सुनीता
भारत में अपराध के विभिन्न आयाम एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 198-202
-आशीष कुमार
स्त्री आत्मसंघर्ष और मुक्ति मुकाम : पीली आँधी उपन्यास के विशेष संदर्भ में 203-206
-हिमांशु
वर्ण-व्यवस्था की प्रासंगिकता 207-209
कुलदीप सिंह
अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे भारत की विदेश निति और उसका बढता स्वरुप 210-212
जितेन्द्र कुमार
डॉ. शिवसागर त्रिपाठी की कृतियों में राष्ट्रीय चिन्तन 213-216
सुनीता लुहाड़िया

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 8 अंक : 31(III)
विक्रमी सम्वत् : 2076
जुलाई-सितम्बर 2018

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत
ISO 9001 : 2008

मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था
- Santosh Kumar Yadav

सहशिक्षा एवं कन्या विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन — 250-254
- सुनीता

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के उपन्यासों में नारी के दार्शनिक रूप — 255-258
- Virbhan Mehra

भारत पाकिस्तान निर्माण — 259-261
- डॉ० कुलदीप सिंह

भारत व श्रीलंका के मध्य विवादास्पद मुद्दे एवं समस्याए — 262-264
- जितेन्द्र कुमार

Trends of Foreign Direct Investment in BRICS Countries : Infow and Outflow Anlaysis — 265-268
- Shilpi Devi, Dr. Archna Chaudhry

Population Characteristics of Bawaria Caste in Rewari District: A Clan Wise Analysis — 269-274
- Ashu Rani

Child Labour informal sector of Haryana: A Socio-Economic Analysis — 275-286
- Sushma

287-291

को कमजो
के आश्रम
के आश्रम
जो मुस्लिम
इसका ध्यान
आदि दलों
मीडिया? 9
गं
करपात्री के
भाजपा सरक
ाक बढा हु
ठूंस दिया
मोदीभक्तों अ
लगेगा....?
विचार से क
निभाते रहोगे
धोखा करते
भा
भर्तियों पर र
का वायदा व
इस सरकार ने
9 करोड़ लो
जाओगे। भाज
भी ये गांधी,
धूर्तता व ठगी
कर रहे हैं? व
ही अपने स्व
अंबेडकर को
कभी माफ न
बुद्धि
पर 20 प्रतिशत
को? पहले का
अब वही लोग
राष्ट्र बनाने क
नेहरु,
गोलवलकर गौ
है आप अब क
एक मुगल सरा

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 7
Issue : 28 (IV)
April-June 2018
www.chintanresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

11-15
16-19
20-24
25-31
32-35
36-44
45-47
48-53
54-59
60-64
65-68
69-75
76-81
82-88
89-94
95-98
slative
105
106-109
113
116
122

दलित प्रश्न का औचित्य 123-125
-डॉ० मनोज कुमार साह
भारत में मध्यम वर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति 126-132
-शिव शंकर यादव
बिहार की राजनीति में जातीय सशक्तीकरण 133-136
-जितेन्द्र कुमार यादव
Executive Legislation in India: An Analysis 137-143
-Reena Kansal
जानराजचम्पूकाव्ये अर्थालङ्कारचारुत्वम् 144-147
-धर्मेन्द्रः
प्राचीन काल में भारत की शिक्षा प्रणाली 148-155
-अमित कुमार
Partap Singh Kairon : Role in Akali Dal (1929-1940) 156-159
-Amandeep Singh
Rights and Duties of Daughter under Hindu Law 160-166
-Dr. Preety Jain
Procedure In Relation to Children in Conflict with Law 167-175
-Pawan Kumar
Non alignment policy of Pt. J.L. Nehru 176-180
-Dr. Rekha Rani
Understanding family organization in India: Trends and Determinants 181-187
-Dr. Shaizy Ahmed
Robert Frost's Poetry: A Reflection of Modern Dilemma as well as Elucidation 188-193
-Mamta Kamboj
शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की नैतिक निर्णय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन 194-197
-सुनीता
भारत में अपराध के विभिन्न आयाम एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 198-202
-आशीष कुमार
स्त्री आत्मसंघर्ष और मुक्ति मुकाम : पीली आँधी उपन्यास के विशेष संदर्भ में 203-206
-हिमांशु
वर्ण-व्यवस्था की प्रासंगिकता 207-209
-कुलदीप सिंह
अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे भारत की विदेश निति और उसका बढता स्वरुप 210-212
-जितेन्द्र कुमार
डॉ. शिवसागर त्रिपाठी की कृतियों में राष्ट्रीय चिन्तन 213-216
-सुनीता लुहाड़िया
नैषधीयचरितस्य काव्यशास्त्रीयं समीक्षणम् 217-220
-डॉ. बाबूलालः मीना
वेदों में एकेश्वरवाद की अवधारणा 221-224
-डॉ. रामबाबू
उदयपुर मण्डल के संस्कृत-मर्मज्ञ स्व. गणेशराम शर्मा का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 225-228
-डॉ. आशा सिंह रावत
किरातार्जुनीयस्य काव्यशास्त्रीयं समीक्षणम् 229-234
-डॉ. बाबूलालः मीना
प्रातिशाख्य परम्परा में वाजसनेयी-प्रातिशाख्य का महत्त्व एवं वैशिष्ट्य 235-239
-डॉ. आशा सिंह रावत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 7
Issue : 29(III)
July-September 2018
www.chintanresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

Sexual Harassment Laws: A Mirage for Women Empowerment
Dr. Babita Devi, Deepak Thakur 149-155
महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में काव्यशास्त्रगतौचित्य विमर्श
- अपर्णेश कुमार शुक्ल 156-160
न्यायदर्शन में सिद्धान्त : एक समीक्षा
- सन्दीप कुमार मिश्र 161-164
महाभारत में वर्णित राजधर्म की समकालीन समाज में उपादेयता
- अमरजीत पाण्डेय 165-169
Yogic Practices Reduce the Academic Stress Among Teacher Trainees
- Dr.Bhanvra Kumari 170-177
धर्म या अंधविश्वास : हिन्दी सिनेमा की नजर से
- डॉ. सुरेन्द्र कुमार 178-180
लोक संस्कृति एवं लोक जीवन
- Virbhan Mehra 181-183
पोस्ट ट्रूथ अवधारणा का वर्तमान राजनीति के संदर्भ में अध्ययन
- Dharm Veer 184-188
छायावाद: एक मुकम्मल पाठ
- डॉ० जोतिमय बाग 189-190
Goods and Services Tax (GST): Issues and Challenges
- Dr. Ratul Saha 191-198
Child Labour and Educational attainment: A Reflection on Current Practices
- Praveen Singh, Dr.Shaizy Ahmed 199-207
Primary Education system and social climate
- Santosh kumar Yadav 208-211
Cultural Change in the age of Culturai Crisis
- Dr. Indira Srivastava 212-215
झारखण्ड के लोकनाट्य छऊ
- दीपक प्रसाद 216-220
असहयोग आन्दोलन एवं मोहनदास कर्मचन्द गान्धी
- डॉ० कुलदीप सिंह 221-225
मुद्राराक्षस-नाटकम्
- डॉ० डिम्पल रानी 226-233
भारतीय समाज पर मादकों के पड़ने वाले प्रभाव के समाजशास्त्रीय अध्ययन
- रेखा देवी 234-237
रामायण तथा तत् आधारित साहित्य में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक-चेतना
- ऋचा द्विवेदी 238-241
संत रविदास के काव्य में सामाजिक चेतना के स्वर
- जगमोहन 242-246
नयी कविता और केदारनाथ सिंह
- धीरज कुमार मिश्रा 247-250
दक्षिण एशिया में सार्क की भूमिका, समस्याएं एवं समाधान
- जितेन्द्र कुमार 251-255
Income, Expenditure and Saving Structure of Bawaria Caste in Rewari District: A Clan Wise Analysis
- Ashu Rani, K.V. Chamar 256-266
Determinants of Foreign Direct Investment in BRICS Countries: A Review
- Shilpi Devi, Dr. Archna Chaudhry 267-271

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 2.645

ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List No. 41241

Year : 6
Issue : 24(**II**)
April-June 2017
www.chintanresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

शोध-आलेखानुक्रम

सम्पादकीय

हरियाणवीं लोकगीतों से ग्रामीण संस्कृति की झलक
प्रदीप 8-10

याज्ञिक कर्मकाण्ड और स्त्री
डॉ० जय सिंह 11-12

वेदभाष्य सम्बन्धित विभिन्न दृष्टियों का समीक्षण (ऋषिदयानन्द, सायण एवं पाश्चात्य भाष्यकारों के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ. सत्यप्रिय आर्य 13-18

वैदिक परम्परा में वाद एवं संवाद
मंजीत कुमारी 19-22

Gender Justice- Constitutional and Judicial Perspective in India
Dr. Preeti **23-27**

Sexual Offences in India : A Critical Analysis of Criminal Amendment Act
Dr Rinku **28-34**

Juvenile Delinquency: A Study Through The Structural Functionalism
Dr. Arvind Rathore **35-38**

Role of Emotional Intelligence in Organizational Excellence
Dr. Sherry **39-42**

Evaluation of Legal AID and Legal Literacy- Tools of Social Justice
Sonia **43-47**

Women in Armed Forces: Problem and Prospects
Prabhavit Dobhal **48-54**

Disasters: An Indian Experience
Pallvi Sharma **55-60**

Municipal Government in Haryana: Role of IT through E-Governance: A Study
Parveen Kumar **61-71**

दर्शनशास्त्र का इतिहास
डॉ. यशोदा 72-76

Alcoholism : Issues and Challenges in Northern India
Priya 77-82

Digital Technologies and Development of New Teaching Strategies in Present Scenario
Dr. Sachin Kaushik 83-90

भारतीय परंपरा की शिक्षा का इतिहास
डॉ० कुलदीप सिंह 91-95

Rural Tourism and Sustainable Development: A Case Study of Jyotisar, Kurukshetra (Haryana)
Amrit Singh 96-106

Agency, Capability and Corporate Social Responsibility
Aggya Pandeya **107-114**

Air Pollution: Environmental Challenges, Impact on Health and Control Measures
Dr. Dharmendra Kumar **115-119**

शिक्षा-दर्शन की प्रणाली
डॉ.(श्रीमती) राजेश्वरी मीना **120-121**

website : www.chintanresearchjournal.com

ISSN : 2348 – 876X
Impact Factor 2.571

International Refereed

आर्य

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)

(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)

(Indexed & Listed at : Research Bib., Japan)

(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

वर्ष : 3 अंक : 12(II)

विक्रमी सम्वत् : 2073

सृष्टि सम्वत् : 1960853117

दिसम्बर 2016–फरवरी 2017

संपादक

आचार्य (डॉ॰) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO : 9001-2008

- कौटिल्य और स्त्री विमर्श
  - Dr Sushma 107–110
- कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री-अस्मिता के नये सन्दर्भ
  - डॉ. शशी पालीवाल 111–115
- भारतीय इतिहास में सूफी संत : एक समीक्षा
  - डॉ० कुलदीप सिंह 116–123
- भारतीय इतिहास का विकृतिकरण : सूफी मत के विशेष संदर्भ में
  - डॉ० कुलदीप सिंह 124–128

(ISSN : 2348 – 876X)
Impact Factor 2.571

आर्य रिसर्च जर्नल
International Refereed वर्ष:3, अंक: 12(II), (दिसम्बर 2016–फरवरी 2017) (पृ.सं. 116–123)

भारतीय इतिहास में सूफी संत : एक समीक्षा

डॉ० कुलदीप सिंह
सुपुत्र श्री रामसिंह पुनिया
म० सं० 878 व गांव भंटू कलां
फतेहाबाद (हरियाणा)

शोध–आलेख सार

राजा अशोक से लेकर सम्राट हर्षवर्धन तक भारत में अनेक प्रतापी सम्राट हुए जिन्होंने भारत को एक राष्ट्र के रूप में स्थायित्व प्रदान करने तथा इसकी सभ्यता व संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भरपूर योगदान प्राप्त किया । समस्त धरा के शासक भारतवर्ष का प्रत्येक क्षेत्र में लोहा मानते थे । धीरे-धीरे बौद्ध संप्रदाय की विकृतियां हिंदू धर्म को कमजोर करने लगीं । जो आंदोलन हिंदू धर्म को मजबूती प्रदान करने हेतु जन्मा था वही उसकी कमजोरी का कारण बनने लगा । बौद्धों ने अपने आपको हिंदू धर्म से अलग कहना शुरू कर दिया । हालांकि कुमारिलभट्ट व शंकराचार्य जैसे दार्शनिकों व राष्ट्रभक्तों ने बौद्धों की अनेक विकृतियों को दिखलाकर उनहें सही पथ पर लाने के अनेक प्रयास किए लेकिन बौद्ध थे कि पाखंडवश मरने को तैयार थे लेकिन झुकने को नहीं । जिसका निरंतर विरोध भगवान बुद्ध ने किया था उसी का समर्थन बौद्ध विद्वान पूरे प्रयास से करने लगे । अधिकांश बौद्ध विदेशों में चले गए तथा वहीं पर इस संप्रदाय का प्रचार करने लगे । बौद्ध व जैन संप्रदायों की अनेक विकृतियां ऐसी थीं कि जिन्होंने हिंदुओं के जीवन में प्रवेश कर लिया तथा वहां पर अपनी गहरी जड़े जमा लीं ।

मुख्य–शब्द : भक्तिवाद, भारतीय राष्ट्रवाद, स्वदेशी, जीवन-देर्शन, ब्रह्मज्ञान, सेक्युलरिज्म ।

राजा अशोक की अतिवादी अहिंसा, दया, क्षमा, शांति व करूणा की नीतियों से कमजोर हो रहे भारतवर्ष ने सम्राट हर्षवर्धन तक तो अपनी रक्षा कर पाने में किसी तरह से सफलता प्राप्त की परंतु उसके पश्चात् वह इतना कमजोर हो गया था कि ऐसा करने में वह असमर्थ हो गया । सम्राट अशोक से लेकर सम्राट हर्षवर्धन तक भारत में अनेक प्रतापी सम्राट हुए जिन्होंने भारत को एक राष्ट्र के रूप में स्थायित्व प्रदान करने तथा इसकी सभ्यता व संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भरपूर योगदान प्राप्त किया। समस्त धरा के शासक भारतवर्ष का प्रत्येक क्षेत्र में लोहा मानते थे । धीरे-धीरे बौद्ध संप्रदाय की विकृतियां हिंदू धर्म को कमजोर करने लगीं । जो आंदोलन हिंदू धर्म को मजबूती प्रदान करने हेतु जन्मा था वही उसकी कमजोरी का कारण बनने लगा । बौद्धों ने अपने आपको हिंदू धर्म से अलग कहना शुरू कर दिया । हालांकि कुमारिलभट्ट व शंकराचार्य जैसे दार्शनिकों व राष्ट्रभक्तों ने बौद्धों की अनेक विकृतियों को दिखलाकर उनहें सही पथ पर लाने के अनेक प्रयास किए लेकिन बौद्ध थे कि पाखंडवश मरने को तैयार थे लेकिन झुकने को नहीं । जिसका निरंतर विरोध भगवान बुद्ध ने किया था उसी का

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.151

Scanned by CamScanner

पाण्डुलिपि सरंक्षण: एक अभिगम–डॉ० अनीता; विजय कुमार भारती 2755
गद्दी जनजाति के लोकगीतों में विरहगान–भरत सिंह 2759
लिच्छवि-गुप्त सम्बन्धों का राजनीतिक विश्लेषण–डॉ० उमेश सिंह 2765
'मुर्दहिया' आत्मकथा में लोकविश्वास–डॉ० सचेन्द्र कुमार 2767
औपनिवेशिक उत्तराखण्ड में स्त्री शिक्षा एवं स्त्री चेतना का प्रसार–रोहित पाण्डेय; डॉ० शरद भट्ट 2770
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बहुविषयक शिक्षा: सरोकार और चुनौतियाँ–डॉ० नाहर सिंह 2773
भारतीय ग्रामीण समुदाय में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के मार्ग में बाधाएँ–प्रमोद वर्मा; डॉ० आर0के0 ठाकुर 2776
माध्यमिक स्तर के हिंदी माध्यम वाले विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण दक्षता का अध्ययन–दिव्यांशी आमेटा 2780
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो में ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां एवं संभावनाएँ–डॉ० सुनीता अग्रवाल 2785
भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता (21वीं सदी के विशेष संर्दभ में)–डॉ० अन्जू शर्मा 2789
पंचशील की प्राथमिक शिक्षा में अवधारणा–शिप्रा अग्रवाल; डॉ० हलधर यादव 2794
बसोहली चित्रकला में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन दर्शन–डॉ० ईश्वर चन्द गुप्ता 2798
योग दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० सुनीता भार्गव; डॉ० रीटा झाझडिया 2801
जे० कृष्णमूर्ति के शान्ति व नैतिक मूल्य का अध्ययन–दिलीप कुमार सिंह 2804
हरियाणा लोकसाहित्य में कामपरक मूल्यों की अभिव्यक्ति–पूनम रानी; डॉ० सुरेश कड़वासरा 2807
जैनेन्द्र कुमार की वृद्ध मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ एवं मानसिक दशाएँ–जयश्री काकति 2812
यमदीप किन्नर जीवन का खुला दस्तावेज–आर्या एम०वी० 2815
मिट्टी, जड़ों से जुड़ी हुई कविता–श्रीलेखा के०एन० 2817
महर्षि पतंजलि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–मनोज कुमार सकलानी; डॉ० हलधर यादव 2819
मूल्यों का दार्शनिक अर्थ एवं वर्गीकरण–गीता पांडे; डॉ० हलधर यादव 2823
कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन–ममता मेहरा; डॉ० मंजुला सिंह 2827
स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन–पूनम रानी; डॉ० हलधर यादव 2831
भारत में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक विषय के चयन का विधार्थियों की व्यावसायिक अभिवृति पर प्रभाव का एक अध्ययन –शशि शर्मा; डॉ० हलधर यादव 2835
कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक समायोजना का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–भूमिका मिश्रा; डॉ० विमला सिंह 2839
शिवमूर्ति की कहानियों का सामाजिक यथार्थ–कृष्ण देव 2843
खड़ी बोली गद्य के विकास में 'हिंदी प्रदीप' का योगदान–सुभाष 2846
'देश भीतर देश' उपन्यास और असम की राजनीति–संजीव मण्डल 2849
मधु कांकरिया के उपन्यासों की भाषा–दीपा कुमारी 2853
विभाजन और विस्थापन के बीच का संघर्ष बनाम 'सिक्का बदल गया' कहानी–गीतांजलि 2857
पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से महिला सशक्तिकरण–उषा कुमारी 2860
डॉ० भीमराव अम्बेडकर का दलित चेतना एवं सामाजिक उत्थान में योगदान–बबीता मलिक; डॉ० राजीव कुमार 2864
हरियाणा राज्य में महिला राजनीतिक अधिकारों की स्थिति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० संगीता विजय; ऋतु शर्मा 2868
गुरु तेग बहादुर बाणी की विलक्षणता–डॉ० रविन्द्र कौर बेदी 2873
संत रविदास: अमृतवाणी–डॉ० दर्शन सिंह 2876
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के धर्म, राजनीति एवं नैतिकता सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० कुलदीप सिंह 2879
विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में परिलक्षित भाषा एवं शिल्प–अनीता; प्रो० प्रदीप के० शर्मा; प्रो० रामजन्म शर्मा 2883

Scanned by CamScanner

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के धर्म, राजनीति एवं नैतिकता सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता

डॉ० कुलदीप सिंह

असिसटैंट प्रोफेसर (इतिहास), दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

महात्मा गांधी जी के धर्म सम्बन्धी विचार उनके जीवन काल में जितने सार्थक थे आज उससे भी अधिक सार्थक हैं। आवश्यकता है केवल परिवर्तित परिस्थितियों के संदर्भ में समझने की है और उनकी नव वातावरण के संदर्भ में व्याख्या करने की है। अधिकांशतः लोग गांधी को बिना पढ़े ही उनके समर्थक या विरोधी हो जाते है जोकि गलत है। अफ्रीका से लेकर भारत के स्वतन्त्रता तक तथा शांति, अहिंसा, सह-अस्तित्व से लेकर नैतिकता, धर्म व अध्यात्म आदि सभी क्षेत्रों में सम्मान एवं महत्त्व को प्राप्त युग-पुरुष हैं।

मुख्य-शब्दः सामाजिक सेवा, धर्म, राजनीति एवं नैतिकता ।

जीवन दर्शनः

दुनिया में महात्मा गांधी अकेले ऐसे व्यक्ति है जिनकी 100 देशों में मूर्तियां लगी हैं तथा 150 देशों में डाक टिकट जारी हुए हैं। महात्मा गाँधी को सादा और उच्च जीवन जीने वाले व्यक्ति के रूप में, सत्य के खोजी के रूप में जाना जाता है। गाँधी जी का ऐसा व्यक्तित्व एक या कुछ परिस्थितियों की देन नहीं था। भिन्न-भिन्न घटनाओं, व्यक्तियों तथा अन्य अनुभवों की विविधता ने गाँधी जी के व्यक्तित्व को नई दिशा दी। महात्मा गाँधी जी का वास्तविक नाम मोहनदास कर्मचंद गाँधी था। उनका जन्म 2 अक्तूबर, 1869 ई. को आधुनिक भारत के राज्य गुजरात के पोरबन्दर अथवा सुदामापुरी में हुआ। गाँधी जी ने प्रारम्भिक शिक्षा पोरबन्दर से और हाई स्कूल की शिक्षा राजकोट से ग्रहण की । स्कूल में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा पर जोर दिया जाता था। अंग्रेजी का प्रभाव इतना अधिक था कि संस्कृत और फारसी को भी अंग्रेजी के माध्यम से सीखना होता था, मातृभाषा के माध्यम से नहीं। यदि कोई लड़का कक्षा में गुजराती में बोलता जिसे वह समझता था, को दण्ड दिया जाता था।

अफ्रीका से भारत लौटने के पश्चात् गाँधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति के लिए संघर्ष शुरू किया। उनका आश्रम एक छोटी प्रयोगशाला थी। आश्रम में लोगों की स्वतन्त्रता और उत्तरदायित्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है- "वहां कोई शासक संस्था नहीं, सिर्फ व्यवस्थापक मण्डल था जिसको आश्रमवासियों ने चुनकर बनाया था। आश्रम के नियमों और व्यवस्थापक मण्डल के प्रस्तावों का पालन लोग अपनी जिम्मेवारी समझकर करते थे, किसी सत्ता या दण्ड के भय से नहीं। मई 1925 में उन्होंने साबरमती आश्रम की स्थापना की और सामाजिक सेवा के कार्य शुरू किए । निरन्तर संघर्ष करते हुए गाँध ी जी ने अंग्रेजी शासन की नींव उखाड़ दी और भारतीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया। अपने पूरे जीवन में सत्य और अहिंसा का पालन करने वाले इस महान् व्यक्ति की 31 जनवरी, 1948 को हत्या कर दी गई । गाँधी जी की मृत्यु के बाद भी उनका दर्शन आने वाले समय के लिए अध्ययन का केन्द्र बना रहा है और बना रहेगा। जीवन यात्रा के दौरान उन पर अनेक स्त्रोतों का प्रभाव पड़ा जिन्हें हम मूलतः भारतीय और पश्चिमी दो भागों में बांट सकते हैं।

गाँधी जी गीता को हिन्दू धर्म की अमूल्य देन मानते थे। वे गीता को कर्म का संदेश देने वाला, जीवन को पवित्र बनाने वाला, मोक्ष का मार्ग दिखाने वाला और समस्त मानव जाति का कल्याण करने वाला पवित्र ग्रन्थ मानते थे। गीता के अतिरिक्त हिन्दू धर्म के अन्य ग्रन्थों का भी गाँधी जी पर प्रभाव पड़ा। उन्होंने 'उपनिषदों', 'वेदों', 'मनुस्मृति' आदि का गहरा अध्ययन किया। 'रामायण' के श्रीराम के जीवन से उन्होंने त्याग और तपस्या का पाठ सीखा ।

रामायण से ही शिक्षा पाकर उन्होंने अपन जीवन की आवश्यकताओं को न्यूनतम कर लिया। उनकी रामराज्य की धारणा भी बहुत कुछ 'रामायण' के रामराज्य से ही प्रेरित है। महात्मा गाँधी जी पर जैन, इस्लाम और बौद्ध धर्म की धार्मिक पुस्तकों और ग्रन्थों तथा शिक्षाओं का भी प्रभाव पड़ा। गाँधी जी ने जैन धर्म और बौद्ध धर्म से अपने अहिंसा के सिद्धान्त का विकास किया। इस्लाम की पवित्र कुरान ने भी गाँधी जी िके प्रेरणा दी। इसके पढ़ने के बाद गाँध ी जी ने इस्लाम को शान्ति और अहिंसा का धर्म माना । कुरान के अध्ययन से गाँधी जी ने इस्लाम शब्द का अर्थ शान्ति और सुरक्षा तथा मुक्ति निकाला है।

पश्चिमी सभ्यता के सम्पर्क में रहने और पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने के कारण गाँधी जी को ईसाई धर्म को नजदीक से समझने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने बाईबल को गहराई से पढ़ा। बाईबल के इस कथन-पाप से घृणा करो, पापी से नहीं, से भी वे बहुत प्रभावित हुए। "यीशू का साधारण जीवन, कठोर आजीविका और उच्च नैतिक शिक्षा, सत्य और समर्थक पश्चिमी चिन्तकों के बीच मुख्य प्रेरणादायक तत्त्व थे।" गाँधी जी ने बाईबल की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारा परन्तु कभी भी अपने को ईसाई घोषित नहीं किया।

Scanned by CamScanner